डॉ० आभा द्विवेदी (सहायक आचार्य) B.A.-II
वैशाली महिला महाविद्यालय,
हाजीपुर



गाथा-सप्तशती → यह ग्रन्थ प्राकृत-भाषा के गीति-साहित्य की अनमोल निधि है। ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, रसगंगाधर आदि मान्य आकर ग्रन्थों में रस तथा ध्वनि के मुख्य उदाहरण के रूप में उद्धृत किए जाने का गौरव इसे प्राप्त है। 'गाथा' प्राकृत भाषा का लोकप्रिय छन्द है। सात सौ प्राकृत गाथाओं के एकत्र संकलन के कारण यह ग्रन्थ 'गाहा सत्तसई' या गाथा-सप्तशती के नाम से विख्यात है। इसके संग्रहकर्ता 'हाल' या 'शालिवाहन' नामक नरेश थे। सामान्य लोकजीवन का चित्रण, स्वाभाविकता, हृदयपक्ष का प्राधान्य तथा चित्रात्मक वर्णन इस काव्यग्रन्थ की महती विशेषता है

आर्यासप्तशती → बंगाल के अन्तिम सेन नरेश लक्ष्मण-सेन की सभा के मान्य कवि गोवर्धनाचार्य द्वारा आर्या छन्द तथा सात सौ पद्यों में रचित यह काव्य निश्चित रूप से 'गाथा-सप्तशती' से प्रेरित है। गोवर्धनाचार्य शृंगाररस के मान्य कवि तथा 'आर्या' की रचना में नितान्त निष्णात थे। शृंगार की नाना अवस्थाओं का वर्णन अतीव मार्मिक, स्वाभाविक तथा मनोहर है। वस्तुतः कवि ने आर्या जैसे छोटे छन्द में विशाल भावों को भर कर 'गागर में सागर' भरने की लोकोक्ति को चरितार्थ कर दिया है। गाथा-सप्तशती तथा आर्यासप्तशती दोनों का विपुल प्रभाव हिन्दी के सतसई साहित्य पर पड़ा। हिन्दी के महाकवि बिहारी इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

स्तवमाला → श्री रूपगोस्वामी ने भगवान श्रीकृष्ण, राधा, वृन्दावन, यमुना का स्वरूप तथा राधा-कृष्ण

डॉ. आभा त्रिवेदी (सहायक आचार्य) B.A. II
... महिला महाविद्यालय
कानपुर



की ललित केलि का अतीव रसमय वर्णन अनेक स्तुतिपद्यों में किया है। इन स्तुतियों का एकत्र संग्रह 'स्तवमाला' नाम से विख्यात है। इस माला में अनेक अष्टपदियाँ हैं, जिनपर गीतगोविन्द का नितान्त स्फुट प्रभाव है। स्तवमाला की ये स्तुतियाँ गीतिकाव्य का मनोरम रूप उपस्थित करती हैं। इन गीतों में कवि ने अपना नाम न देकर अपने अग्रज 'सनातन' का ही नाम रखा है, जिससे बहुत से आलोचकों को इसे रूपगोस्वामी की रचना मानने में संकोच है। इन गीतों की भाषा तथा शैली रस-स्निग्ध हैं।

इनके अतिरिक्त गीतिकाव्य की परम्परा में बिल्हण का 'विक्रमाङ्कदेवचरित', पंडितराज जगन्नाथ की 'भामिनीविलास', आदि अत्यन्त प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

## 2) भक्तिकाव्य / धार्मिक गीतिकाव्य

इनमें स्तोत्रकाव्यों की गणना होती है। संस्कृत का स्तोत्र-साहित्य बड़ा ही विशाल, सरस तथा हृदयस्पर्शी है। स्तोत्रकाव्य धर्मपरक होने के कारण समाज में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये शृंगार तथा विराग दोनों प्रकार की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। इन काव्यों का प्रभाव इतना बढ़ा कि जैन तथा बौद्ध धर्मावलम्बी विद्वानों ने भी इस शैली में काव्य रचनाएँ कीं। ये काव्य भक्ति एवं दर्शन दोनों प्रकार की भावनाओं से युक्त हैं। इन स्तोत्रकाव्यों की गीतिरचना बहुत ही आकर्षक तथा गेय है। यह एक विशाल साहित्य है, अतएव यहाँ कतिपय प्रसिद्ध स्तोत्रकाव्यों तथा उनके कवियों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

क्रमांक 2

शिव, हनुमान आदि नाना देवी-देवताओं की परम रमणीय स्तुतियाँ लिखी हैं। इन स्तोत्रों की संख्या बहुत अधिक है। सभी को इनकी रचना मानना उचित नहीं है, परन्तु इनमें से अनेक प्रसिद्ध स्तोत्र इनकी ललित लेखनी के प्रसाद हैं। 'भज-गोविन्दम्' तथा 'सौन्दर्य-लहरी' संस्कृत स्तोत्र-साहित्य के श्रृंगार (अलङ्कार) हैं।

मुकुन्दमाला → कुलशेखर द्वारा रचित यह स्तोत्र वैष्णव स्तोत्रों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसमें कुल 34 पद्य हैं। जिनमें कवि कभी अपनी दीन-हीन दशा का वर्णन करते हुए आत्मविस्मृत हो जाता है, तो कभी वह भगवान के विराट रूप से चमत्कृत हो उठता है। यह वैष्णव स्तोत्र का मुकुट-मणि है।

आलवन्दार स्तोत्र → यामुनाचार्य का तमिल नाम आल-वन्दार था। अतएव इनका परम रम्य स्तोत्र 'आलवन्दार स्तोत्र' नाम से विख्यात है। आन्तरिक सुषमा के कारण भक्तजन इसे 'स्तोत्र-रत्नम्' नाम से भी पुकारते हैं।

कृष्णकर्णामृत → कृष्ण की बाललीला पर आधारित यह गीतिकाव्य नितान्त रसपेशल, स्निग्ध तथा कोमलकान्त है। कवि लीलाशुक ने कृष्ण को अपने प्रियतम रूप में उपास्य बताकर माधुर्य भक्ति का उज्ज्वल दृष्टान्त प्रस्तुत किया है। चैतन्य मत में यह भागवत के समान ही प्रमाण माना जाता है।

डा. आभा त्रिवेदी (सहायक आचार्य)
वैकुण्ठी महिला महाविद्यालय
गाजीपुर



**शिवमहिम्न स्तोत्र** → भाषा के लालित्य तथा भावों की दार्शनिकता के कारण यह स्तोत्र शैवस्तोत्रों में सर्वाधिक लोकप्रिय है। शिखरिणी छन्द में रचित होने से यह नितान्त संगीतमय है। मूल रूप से इसमें ३१ या ३२ पद्य ही थे, सम्प्रति ४० पद्य मिलते हैं। अतएव अन्तिम के आठ नौ पद्य बाद में जोड़े गए प्रतीत होते हैं। टीकाकारों ने 'पुष्पदन्त' नामक किसी गन्धर्व को इसका रचयिता बताया है, परन्तु मद्रास की अनेक हस्तलिखित प्रतियों में कुमारिल भट्टाचार्य ही इसके कर्ता लिखे गए हैं।

**सूर्यशतक** → कवि मयूरभट्ट ने अपने कुष्ठ रोग के निवारणार्थ भगवान सूर्य की स्तुति में स्रग्धरा छन्द में 'सूर्यशतक' नामक नितान्त प्रौढ़ काव्य की रचना की। स्रग्धरा छन्द में लिखा गया यह प्रथम काव्य है। संस्कृत भाषा पर इनकी अत्यधिक प्रभुता है। सूर्य के भिन्न-भिन्न अङ्गों (यथा - रथ, घोड़े आदि) और साधनों के वर्णन में कवि पूर्णतः सफल हुए हैं।

**चण्डीशतक** → बाणभट्ट द्वारा रचित 'चण्डीशतक' भगवती दुर्गा की स्रग्धरा वृत्त में बड़ी प्रशस्त स्तुति है। गद्यकाव्य के समान ही यहाँ भी दीर्घसमास, अनुप्रास तथा ऊँची उत्प्रेक्षा से युक्त बाण की परिचित शैली का चमत्कार दृष्टिगोचर होता है।

**शङ्कराचार्य** → ये भगवान की एक दिव्य विभूति थे। दार्शनिक जगत में इन्होंने अद्वैत तत्त्व की प्रतिष्ठा की, परन्तु व्यवहार जगत में नाना देवताओं की उपासना उन्हें अभीष्ट है। इसीलिए शङ्कराचार्य ने उपास्य ब्रह्म के प्रतिनिधिभूत विष्णु, शिव, गणपति,